03khel100.qxd 02-10-2026 22:43 Page 1

४४ साल बाद आया स्वर्ण

महिला हाकी: लालरेमसियामी के गोल से चीन को हरा कटाया ओलम्पिक का टिकट



काकामिगाहारा (एजेन्सियां)। भारतीय महिला हाकी टीम ने एशियाई खेल में शुक्रवार को चीन को कड़े संघर्ष में १-० से हरा कर ४४ साल बाद स्वर्ण पदक जीत लिया। भारत ने एशियाई खेलों में एकमात्र स्वर्ण १९८२ में दिल्ली में जीता था जब महिला हाकी को पहली बार इन खेलों में शामिल किया गया था। उसके बाद से भारत १९९८ और २०१८ में फाइनल में पहुंचा लेकिन क्रमश: दक्षिण कोरिया और जापान से हारकर रजत पदक से संतोष करना पड़ा लेकिन सलीमा टेटे की अगुआई वाली इस टीम ने इस बार स्वर्ण जीतने का मौका नहीं छोड़ा। इसी के साथ उसने लांस एंजिलिस २०२८ ओलम्पिक के लिए भी क्वालीफाई कर लिया। भारत और चीन के बीच अब तक २९ मुकाबले हुए हैं जिनमें से १२ चीन ने और १२ ही भारत ने जीते जबकि पांच मैच ड्रा रहे हैं। भारतीय टीम ने चीन के खिलाफ पहले क्वार्टर से दबाव बनाया। बलजीत कौर को छठे मिनट में ग्रीन कार्ड मिला लेकिन भारत ने चीन पर दबाव बनाया और भारत के लिए २००वां अंतरराष्ट्रीय मैच खेल रहीं लालरेमसियामी ने १०वें मिनट में मैदानी गोल दागा। इस तरह भारत ने शुरुआत में ही १-० की बढ़त बना ली। भारत को इसके बाद पेनल्टी कार्नर मिला लेकिन भारतीय टीम बढ़त दोगुना करने से चूक गयी। हालांकि पहला क्वार्टर समाप्त होने तक भारतीय टीम ने बढ़त बनाये रखी। चीन ने दूसरे क्वार्टर में आक्रामक खेल दिखाया और लगातार भारत पर दबाव बनाए रखा। चीन ने तब राहत की सांस ली जब उसे पेनल्टी स्ट्रोक मिला। चीन के लिए बराबरी हासिल करने के यह शानदार मौका था लेकिन भारतीय महिला टीम की अनुभवी गोलकीपर सविता पूनिया ने दमदार बचाव कर चीन को बराबरी करने से रोक दिया। इसके बाद भी चीन का आक्रामण जारी रहा लेकिन भारतीय डिफेंस ने शानदार प्रदर्शन कर चीन की हर कोशिश को नाकाम किया। दूसरे क्वार्टर में भारत अधिक डिफेंसिव होकर खेल रहा था। हाफ टाइम तक भारत १-० से आगे रहा। इस दौरान २८वें मिनट में वेन डान को ग्रीन कार्ड दिखाया गया। भारत के पास बढ़त को बरकरार रखने की चुनौती थी। भारतीय खिलाड़ियों ने चीन के हर हमले को नाकाम किया और अंत तक बढ़त बनाए रखी। चीन ने आखिरी कुछ मिनटों में रणनीति में बदलाव किया और अपने गोलकीपर को बाहर बैठाया। चीन ने इस तरह अटैकिंग में एक अतिरिक्त खिलाड़ी को उतारा लेकिन उसकी रणनीति सफल नहीं हुई क्योंकि भारत ने अंत में डिफेंस से ज्यादा अटैकिंग करने पर ध्यान दिया। जैसे ही अंतिम सीटी बजी भारतीय खेमा खुशी से झूम उठा। इससे पहले फाइनल एक घंटे विलंब से शुरू हुआ क्योंकि टीमों की बसें रास्ते में ट्रैफिक में फंस गयी। एक अधिकारी ने बताया कि रास्ते में एक हादसे की वजह से यह जाम लगा था हालांकि इसका टीम बसों से कोई सरोकार नहीं था। इस जाम की वजह से खिलाड़ी स्टेडियम देर से पहुंचे। मैच भारतीय समयानुसार अपराह्न ३.३० बजे से शुरू होना था, लेकिन ये ४.३० बजे से शुरू हुआ।

सेपकटकरा : पुरुष टीम को कांस्य

नागोया (एजेन्सियां)। भारतीय टीम शुक्रवार को एशियाई खेलों की सेपकटकरा प्रतियोगिता के पुरुष वर्ग के सेमीफाइनल में मेजबान जापान से ०-२ से हार गयी जिससे उसे कांस्य पदक से संतोष करना पड़ा। जापान ने उसे अन्तिम चार के मुकाबले में १५-१२, १५-१३ से हरया। भारतीय टीम ने दूसरे सेट में जापान को कड़ी चुनौती दी लेकिन आखिर में वह जीत हासिल करने में कामयाब नहीं हो पाई। इससे पहले भारत ने अपने सभी मैच जीतकर ग्रुप ए में शीर्ष स्थान हासिल किया था। उसने ग्रुप चरण में लाओस (२-०), वियतनाम (२-०) और म्यांमार (२-१) को हराया था। दूसरी ओर जापान ने ग्रुप बी में दूसरा स्थान हासिल किया था। उसकी शुरुआत इंडोनेशिया से १-२ की हार से हुई थी। इसके बाद उसने सिंगापुर और कोरिया को हराकर सेमीफाइनल में जगह बनाई। इस बीच भारतीय महिला टीम को ग्रुप ए के अपने शुरुआती मुकाबले में थाईलैंड से ०-२ से हार का सामना करना पड़ा। थाईलैंड ने १५-१०, १५-४ से जीत दर्ज की। वही महिला टीम को क्वाड्रेंट ग्रुप मुकाबले में थाईलैंड के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा। इस हार के साथ ही भारत का अभियान समाप्त हो गया। टीम अपने तीनों ग्रुप मैच हारकर सेमीफाइनल की दौड़ से बाहर हो गयी



स्वर्ण, रजत जीत रचा इतिहास

तीरंदाजी

नागोया (एजेन्सिया)। भारतीय महिला रिकर्व तीरंदाजी टीम ने शुक्रवार को दबाव के बीच शानदार प्रदर्शन करते हुए १० बार की ओलम्पिक चैम्पियन दक्षिण कोरिया को ५-३ से हराकर एशियाई खेलों में अपना पहला स्वर्ण पदक जीता। अनुभवी अंकिता भकत, कीर्ति शर्मा और १७ वर्षीय कुमकुम मोहोड़ ने तेज हवा के कारण चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों के बीच धैर्य बनाए रखते हुए मौजूदा चैम्पियन दक्षिण कोरिया को पछाड़कर ऐतिहासिक जीत दर्ज की। इसके बाद कुमकुम ने धीरज बोम्मादेवरा के साथ मिलकर मिश्रित रिकर्व टीम स्पर्धा में भी ऐतिहासिक रजत पदक हासिल किया। फाइनल में भारतीय जोड़ी को चीन के हाथों ३-५ (३४-३८, ३५-३७, ३७-३६, ३७-३७) से हार का सामना करना पड़ा। पूरे दिन शानदार प्रदर्शन कर रही कुमकुम फाइनल में अपने सर्वश्रेष्ठ लय में नहीं दिखीं। उन्होंने केवल एक बार १० अंक हासिल किए जबकि कई बार आठ और एक बार सात अंक भी हासिल किये।

वहीं चीन की मेंगकी ली ने पांच बार १० अंक हासिल कर अपनी टीम की जीत पक्की की। महिला रिकर्व टीम की यह जीत उसके लगातार बेहतर होते प्रदर्शन का परिणाम है। भारतीय टीम ने मई में शंघाई में पांच साल के इंतजार को खत्म करते हुए विश्वकप स्वर्ण पदक जीता था। उस खिताबी सफर में भी भारत ने सेमीफाइनल में दक्षिण कोरिया को हराया था। शंघाई में स्वर्ण जीतने वाली भारतीय टीम में इस बार भी लगभग वही खिलाड़ी थीं। पूर्व विश्व नंबर एक दीपिका कुमारी की जगह कीर्ति को टीम में शामिल किया गया। दीपिका चयन ट्रायल के जरिए एशियाई खेलों के लिए क्वालीफाई नहीं कर सकी थीं। दक्षिण कोरिया के खिलाफ फाइनल में शुरुआती दो सेट बेहद करीबी रहे। दोनों सेट क्रमश: ५४-५४ और ५६-५६की बराबरी पर समाप्त हुए। इसके बाद तोक्यो ओलम्पिक स्वर्ण पदक विजेता टीम की सदस्य कांग चेयंग के साथ ओ येजिन और ली युनजी वाली कोरियाई टीम तीसरे सेट में लड़खड़ा गयी। उसके तीरंदाजों ने लगातार तीन बार आठ अंक हासिल किए और कुल ५२ अंक ही बना सके। भारत ने मौके का फायदा उठाते हुए ५५ अंक जुटाये और सेट जीतकर ४-२ की बढ़त बना ली। चौथे सेट में दक्षिण कोरिया ने ५४ अंक बनाए। भारत की ओर से कीर्ति ने शुरुआत में आठ अंक हासिल किए, लेकिन समीक्षा के बाद उनके तीर को नौ अंक दिया गया जिससे भारत का स्कोर भी ५४ हो गया। इस सेट में दोनों टीमों का स्कोर बराबर रहने के बावजूद भारत ने मैच अपने नाम किया और मजबूत दक्षिण कोरियाई टीम को हराकर ऐतिहासिक स्वर्ण पदक जीत लिया। इससे पहले भारतीय महिला टीम ने सेमीफाइनल में चीन को ५-१ से हराकर पहली बार एशियाई खेलों के महिला रिकर्व फाइनल में जगह बनाई थी। कुमकुम और धीरज ने इससे पहले मिश्रित रिकर्व स्पर्धा के सेमीफाइनल में जापान को ५-३ से हराकर फाइनल में प्रवेश किया था।

भारतीय जोड़ी ने धीमी शुरुआत करते हुए पहला सेट ३७-३८ से गंवाया लेकिन दूसरे सेट में बराबरी हासिल की। इसके बाद तीसरा सेट जीतकर भारत ने स्कोर ३-३ कर दिया। चौथे सेट में जापान की ओर से सात अंक का एक खराब निशाना भारतीय जोड़ी के लिए निर्णायक साबित हुआ। धीरज और कुमकुम ने ३७-३५ से सेट जीतकर रिकर्व मिश्रित टीम स्पर्धा में पहली बार एशियाई खेलों के फाइनल में भारत की जगह पक्की की। महिला रिकर्व टीम का स्वर्ण एशियाई खेलों में भारत का तीरंदाजी में चौथा स्वर्ण है। इससे पहले पुरुष कंपाउंड, महिला कंपाउंड और मिश्रित कंपाउंड टीमों ने भी स्वर्ण पदक जीते थे। भारतीय महिला रिकर्व टीम ने २०२३ के हांगझोउ एशियाई खेलों में कांस्य पदक जीता था। दिन का समापन पुरुष रिकर्व टीम के रजत पदक के साथ हुआ। धीरज, संजय भोगे और नीरज चौहान की भारतीय तिकड़ी को फाइनल में दक्षिण कोरिया से १-५ से शिकस्त मिली।



स्वर्ण के लिए भिड़ेंगे भारत और पाकिस्तान

नागोया (एजेन्सियां)। विश्व चैम्पियन भारत शनिवार को एशियाई खेलों के पुरुष क्रिकेट के स्वर्ण पदक मुकाबले में पाकिस्तान की युवा टीम के विरुद्ध अपने अनुभवी सितारों से दमदार प्रदर्शन की उम्मीद करेगा। दोनों देशों के बीच यह मुकाबला एशियाई खेलों की पुरुष क्रिकेट प्रतियोगिता का अब तक का सबसे अधिक राजनीतिक तनाव वाला फाइनल होगा। पिछले साल एशिया कप के दौरान शुरू हुई हाथ न मिलाने की परंपरा के कारण इस मुकाबले से पहले या बाद में भी खिलाड़ियों के एक-दूसरे से हाथ मिलाने की संभावना बेहद कम है। हालांकि वालीबाल, टेबल टेनिस और हाकी में भारत-पाकिस्तान के खिलाड़ी अपने मुकाबलों के बाद हाथ मिलाते और गले मिलते नजर आए हैं। एशियाई खेलों में क्रिकेट का स्तर शीर्ष अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं जैसा नहीं है लेकिन भारत-पाकिस्तान मुकाबले और स्वर्ण पदक की अहमियत दोनों देशों के लिए काफी अधिक है। लगातार वर्षा के कारण दोनों टीमों को मैदान पर सीधे सेमीफाइनल मुकाबले में उतरना पड़ा। दोनों टीमों ने अपने-अपने सेमीफाइनल आसानी से जीतकर फाइनल में जगह बनाई। इस तरह दोनों को स्वर्ण पदक के लिए सिर्फ दो मुकाबले जीतने पड़े हैं। भारत के अंतरिम मुख्य कोच वीवीएस लक्ष्मण और नये टी-२० कप्तान श्रेयस अय्यर के लिए भी यह मुकाबला चुनौतीपूर्ण होगा। पाकिस्तान की अगुआई साहिबजादा फरहान कर रहे हैं और टीम में पीएसएल में अच्छा प्रदर्शन कर चुके कई खिलाड़ी हैं। हालांकि उसके पास भारतीय टीम की तरह बड़े अंतरराष्ट्रीय सितारों की फौज नहीं है। वहीं भारत ने इस प्रतियोगिता के लिए अपनी मुख्य टीम भेजी है और जसप्रीत बुमराह जैसे अनुभवी तेज गेंदबाज भी टीम का हिस्सा हैं। मुकाबले के स्थल निशिन सिटी के कोरोगी पार्क की पिच की परिस्थितियां पाक साहिबजादा फरहान, माज सदाकत, हसन नवाज, साइम अयूब और अराफात मिन्हास जैसे खिलाड़ियों को मुकाबला करने का मौका दे सकती हैं।

स्वर्णिम हैटट्रिक





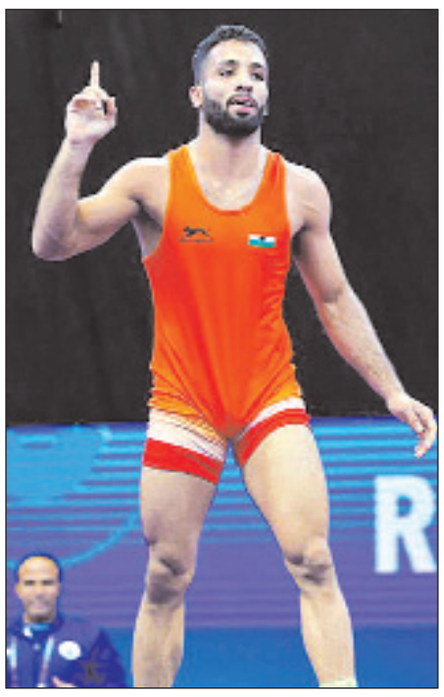


मुक्केबाजी: लवलीना बोरगोहेन, परवीन और अंकुश का स्वर्ण पर पंच

निशियो (एजेन्सियां)। भारतीय मुक्केबाज लवलीना बोरगोहेन (७५ किग्रा) और परवीन हुड्डा (६५ किग्रा) और अंकुश पंघाल (८० किग्रा) ने शानदार प्रदर्शन करते हुए शुक्रवार को यहां एशियाई खेलों में अपने-अपने वर्ग के फाइनल में जीत से देश के लिए स्वर्ण पदकों की हैटट्रिक लगायी। भारत ने इस तरह मुक्केबाजी में एशियाई खेलों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए छह पदक जीते जिसमें तीन स्वर्ण शामिल रहे। देश का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन ग्वांग्झू २०१० चरण में रहा था जिसमें दल ने दो स्वर्ण, तीन रजत और चार कांस्य से कुल नौ पदक जीते थे। इस जीत के साथ लवलीना और परवीन एशियाई खेलों में मुक्केबाजी का स्वर्ण जीतने वाली भारतीय महिला मुक्केबाजों की विशिष्ट श्रेणी में शामिल हो गयी। उनसे पहले महान मुक्केबाज एमसी मैरीकाम ने २०१४ के इंचियोन एशियाई खेलों में ५१ किग्रा फ्लाइवेट वर्ग का स्वर्ण पदक जीता था। भारत की सबसे सफल मुक्केबाजों में शामिल ओलम्पिक पदक विजेता लवलीना ने अपने २९वें जन्मदिन को खास बनाते हुए चीन की बाओ जियी को ५-० के सर्वसम्मत फैसले से हराया। उन्होंने इसके साथ ही पिछले एशियाई खेलों में जीते रजत पदक का रंग बदल दिया। आमतौर पर अपने रक्षात्मक अंदाज अपनाने वाली लवलीना ने इस मुकाबले में आक्रामक शुरुआत की और शुरुआती दौर में ही कुछ सटीक मुक्के जड़े। बाओ ने भी पलटवार में कोई कमी नहीं छोड़ी। चीन की खब्बू मुक्केबाज ने कुछ अच्छे जवाबी हमले किये, लेकिन लवलीना ने राउंड के आखिरी हिस्से में जोरदार वापसी करते हुए कुछ सटीक और दमदार पंच लगाए और ३-२ से पहला राउंड अपने नाम किया। दूसरे राउंड में पिछड़ने के बाद बाओ ने आक्रामक रुख अपनाते हुए दूरी कम करने की कोशिश की। लवलीना ने उन्हें दूर रखते हुए अपने मुक्कों के लिए जगह बनाने की रणनीति अपनाई। राउंड के आखिरी हिस्से में भारतीय मुक्केबाज ने सही दूरी तलाश ली और लगातार सटीक प्रहार करते हुए जजों के स्कोरकार्ड पर ४-१ से बढ़त बना ली। अंतिम राउंड में भी यही सिलसिला जारी रहा। बाओ ने बड़ी संख्या में मुक्के चलाये, लेकिन उन्हें साफ तरीके से निशाने पर लगाने में परेशानी हुई। लवलीना ने मजबूत डिफेंस के साथ अपने मौके का इंतजार किया और सही समय पर पलटवार किया। बढ़त मजबूत करने के बाद लवलीना ने मुकाबले के अंतिम क्षणों में रफ्तार धीमी कर दी और अनावश्यक रूप से भिड़ने से बचते हुए बाओ को दूरी पर रखा तथा मुकाबला अपने नाम कर लिया। पिछले एशियाई खेलों में लवलीना को चीन की एक अन्य मुक्केबाज ली कियान के खिलाफ फाइनल में हारकर रजत पदक से संतोष करना पड़ा था। इस बार उन्होंने उस नतीजे को दोहराने का कोई मौका नहीं दिया। लवलीना ने जीत के बाद कहा आज मेरा जन्मदिन है। यह मेरे लिए बेहद खास जन्मदिन है और मैं बहुत अच्छा महसूस कर रही हूं। मैंने सोचा था कि जन्मदिन पर खुद को स्वर्ण पदक का तोहफा दूंगी। पहली बार मैंने खुद को कोई तोहफा दिया है। मैंने अपना सब कुछ झोंक दिया। एक पल के लिए भी नहीं सोचा कि मैं हार सकती हूं। इसके बाद परवीन ने ६५ किग्रा के फाइनल में परवीन ने पेरिस ओलम्पिक की कांस्य पदक विजेता चीनी ताइपै की नियेन चिन चेन को कड़े मुकाबले में ३-२ के विभाजित फैसले से हराकर सुनहरी कामयाबी हासिल की। परवीन ने शुरुआत शानदार तरीके से की और पहला राउंड ५-० से अपने नाम किया। हालांकि चेन ने दूसरे राउंड में जोरदार वापसी की और सभी पांच जजों ने यह राउंड उनके पक्ष में दिया। निर्णायक तीसरे राउंड में परवीन ने धैर्य बनाए रखा और ३-२ से राउंड जीत लिया। इस तरह उन्हें स्प्लिट निर्णय में ३-२ से विजेता घोषित किया गया। अब बारी अंकुश की थी जिन्होंने फाइनल में दक्षिण कोरिया के किम मिनसियोंग को ४-० से हराया। फाइनल में अंकुश ने शुरुआत से ही आक्रामक रुख अपनाया। उन्होंने पहले राउंड में तेजी और सटीक पंचों के दम पर किम पर दबाव बनाया। भारतीय मुक्केबाज ने यह राउंड ४-१ से अपने नाम किया। किम को पहले राउंड में चेतावनी के कारण एक अंक की कटौती भी झेलनी पड़ी। दूसरे राउंड में अंकुश का प्रदर्शन और प्रभावी रहा। उन्होंने अपने एक-दो पंचों के साथ मौके बनाये और कोरियाई मुक्केबाज के हमलों का जवाब काउंटर पंच से दिया। किम ने कुछ अच्छे पंच लगाये लेकिन अंकुश की रक्षात्मक तकनीक और काउंटर अटैक के सामने वह लगातार पिछड़ते गए। दूसरे राउंड में सभी पांच जजों ने अंकुश को बढ़त दी। तीसरे राउंड में भी अंकुश ने अपनी रणनीति में बदलाव नहीं किया। उन्होंने डिफेंस और अटैक का बेहतरीन संतुलन बनाए रखा। किम के हमलों से बचते हुए भारतीय मुक्केबाज ने सही समय पर काउंटर पंच लगाए। अंकुश ने तीसरा राउंड भी ४-१ से जीत लिया। इस तरह मुकाबले का फैसला ४-० से उनके पक्ष में रहा। चार जजों ने अंकुश को ३०-२६ से विजेता माना, जबकि एक जज ने दोनों मुक्केबाजों का स्कोर २८-२८ रखा। अंकुश की यह जीत इसलिए भी खास रही क्योंकि उन्होंने एशियाई खेलों के ८० किग्रा वर्ग में भारत के लिए पहला स्वर्ण पदक जीता।

पिछड़ कर सोने का दांव लगा गये सुजीत कलकल

कुश्ती



नागोया (एजेन्सियां)। सुजीत कलकल ने पुरुषों के ६५ किलोग्राम वर्ग में अपनी श्रेष्ठता साबित करते हुए शुक्रवार को यहां एशियाई खेलों की कुश्ती प्रतियोगिता में २-९ से पिछड़ने के बाद वापसी करते हुए स्वर्ण पदक जीता और इस दौरान ओलम्पिक चैम्पियन को भी हराया। इससे यह लगने लग गया था कि २३ वर्षीय सुजीत एशियाई खेलों में अपना पहला स्वर्ण पदक जीतने में सफल रहेंगे लेकिन ताजिकिस्तान के अब्दुलमजीद कुदिएव ने भारतीय खिलाड़ी के लिए चुनौती खड़ी कर दी। सुजीत एक समय २-९ से पीछे चल रहे थे लेकिन इसके बाद उन्होंने शानदार वापसी करते हुए लगातार आठ अंक बनाकर १०-९ से जीत हासिल की। कुदिएव ने पहले पीरियड में आर्म लाक का इस्तेमाल करके सुजीत को हमला करने का मौका नहीं दिया। एक बार जब सुजीत ने अपने प्रतिद्वंद्वी की शैली को समझ लिया तो उन्होंने उसे कोई आक्रामक चाल चलने नहीं दी। जहां कुदिएव ने ताकत के मामले में भारतीय पहलवान की बराबरी की वहीं सुजीत ने अपनी फुर्ती से अपने प्रतिद्वंद्वी को पछाड़ दिया और बार-बार ताजिकिस्तान के पहलवान के पीछे जाकर टेक-डाउन मूव किये। एक के बाद एक सफल मूव ने अंतर ८-९ तक कम कर दिया और मुकाबले के खत्म होने में करीब २० सेकेंड बाकी थे तभी सुजीत ने निर्णायक टेक-डाउन किया और अपनी एक अंक की बढ़त का बचाव करते हुए विजेता बने। इससे पहले सुजीत ने अफगानिस्तान के सैयद उमर जजई को १३-३ हराया और क्वार्टर फाइनल में ईरान के अब्बास इब्राहिमजादेहसवादकुही के खिलाफ शानदार प्रदर्शन करते हुए बिना कोई अंक गंवाये तकनीकी श्रेष्ठता से जीत हासिल की। इसके बाद उन्होंने सेमीफाइनल में जापान के ओलम्पिक चैम्पियन कोतारो कियोका को ३-३ से हराया। स्कोर बराबर रहने के बाद सुजीत को अधिक अंक हासिल करने वाला दांव लगाने के कारण विजेता घोषित किया गया। यह एशियाई खेलों में सुजीत का पहला स्वर्ण है और २३ वर्षीय भारतीय ने पिछले १२ महीनों में अंडर-२३ विश्व चैम्पियनशिप, एशियाई चैम्पियनशिप, जगरेब ओपन, तिराना खिताब जीते हैं। हालांकि उन्हें एकमात्र झटका जून में मंगोलियन ओपन में लगा था जहां घुटने की चोट के कारण उन्हें हटना पड़ा। लेकिन इसके अलावा सुजीत अपराजित रहे। फाइनल तक के सफर में ओलम्पिक चैम्पियन को हराने के बाद हासिल की गयी एशियाई खेलों की यह जीत उनके दावे को और मजबूत करती है कि वह केवल भारत ही नहीं बल्कि दुनिया का सबसे प्रभावशाली ६५ किग्रा पहलवान है। पिछले एशियाई खेलों के चरण में भी वह एक योग्य दावेदार था लेकिन तदर्थ समिति ने उसे ट्रायल में बजरंग पूनिया को चुनौती देने की अनुमति नहीं दी। समिति ने बजरंग को सीधे प्रवेश दिया था। सुजीत ने अदालत में तदर्थ समिति के फैसले को चुनौती भी दी थी लेकिन उसे राहत नहीं मिल सकी।

क्रिकेट : भारत करना चाहेगा क्लीन स्वीप

मुल्लांपुर (एजेन्सियां)। पहले दो मैच में जीत हासिल करके क्लीन स्वीप की दहलीज पर खड़ी भारतीय टीम को वेस्टइण्डीज के खिलाफ शनिवार को यहां होने वाले तीसरे और अंतिम एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच में अपनी गेंदबाजी की गुत्थी सुलझानी होगी जिसमें अनुभवी रविंद्र जडेजा के प्रदर्शन पर नजर रहेगी। भारत ने श्रृंखला में दबदबा बनाये रखा है लेकिन उनके प्रदर्शन के बजाय चर्चा पिच के बल्लेबाजी के अनुकूल होने पर केंद्रित रही है, क्योंकि पिछले एकदिनी में ८०० से अधिक रन बने थे। इन परिस्थितियों की आलोचना करने वालों में भारत के मुख्य कोच गौतम गंभीर भी शामिल हैं जो बल्ले और गेंद के बीच संतुलन देखना चाहते हैं। श्रृंखला में पहले ही अजेय बढ़त ले चुकी भारतीय टीम अब अपने गेंदबाजों से बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद करेगी। कप्तान शुभमन गिल की अगुवाई में बल्लेबाजों ने शानदार प्रदर्शन किया है लेकिन गेंदबाजी कमजोर रही है। दोनों मैचों में पहले १० ओवरों में सिर्फ एक विकेट मिला है और दोनों पावरप्ले में १७७ रन लुटाये गये। गिल बल्ले से शानदार प्रदर्शन कर रहे हैं। श्रृंखला में वह पहले ही एक शतक और एक दोहरा शतक लगा चुके हैं। गिल की नाबाद २२३ रन की पारी की मदद से भारत ने पिछले मैच में रेकार्ड ४०६ रन का लक्ष्य हासिल किया था। रोहित शर्मा और विराट कोहली को भी इस श्रृंखला में उपयोगी पारियां खेलने का मौका मिला। लेकिन अब तक केवल चार भारतीय बल्लेबाजों को ही बल्लेबाजी का मौका मिला है।

नेत्रा ने डिंगी सेलिंग में दिलाया कांसा

नागोया (एजेन्सियां)। भारत की सेलर नेत्रा कुमानन ने शुक्रवार को एशियाई खेल में महिलाओं की डिंगी में कांस्य पदक जीत लिया। काइयोह याट हार्बर में दो रेस की फाइनल सीरीज के बाद नेत्रा ने १४ अंक के साथ फिनिश किया। थाईलैंड की सोफिया मोंटगोमरी ने पांच अंक के साथ स्वर्ण पदक जीता, जबकि सिंगापुर की जानिया एंग न १३ अंक के साथ रजत पदक हासिल किया। एशियन गेम्स में भारत का सेलिंग में यह तीसरा पदक है। इससे पहले पुरुषों की स्किफ में मनु फ्रांसिस और प्रिंस कुरिसिंकल नोबल ने सिल्वर और महिलाओं की स्किफ में हर्षिता तोमर और शीतल वर्मा ने कांस्य पदक जीता था। नेत्रा ने सप्ताह की शुरुआत में हुई क्वालिफिकेशन सीरीज से सात रीकैलकुलेटेड अंक के साथ फाइनल में एंट्री की। फाइनल एक में नेत्रा छठे स्थान पर रहीं लेकिन फाइनल दो जीतकर (एक पाइंट जोड़कर) जवाब दिया जिससे वह ओवरआल तीसरे स्थान पर पहुंच गयी। नेत्रा १४ नेट अंक (क्वालीफिकेशन सीरीज और फाइनल से सात-सात अंक) के साथ हांगकांग की स्टेफनी नार्टन के बराबर रहीं लेकिन पूरी सीरीज में बेहतर हेड-टू-हेड रेकार्ड रखने के बाद टाई-ब्रेक में कांस्य पदक जीता। नेत्रा ने २०२१ में ओलम्पिक के लिए क्वालिफाई करने वाली पहली भारतीय महिला सेलर बनकर इतिहास रचा था। इसके बाद उन्होंने पेरिस ओलम्पिक २०२४ के लिए फिर से कवालिफाई किया था। दूसरी तरफ दो बार के ओलम्पियन विष्णु सरवनन पुरुषों की डिंगी में २१ अंक के साथ चौथे स्थान पर रहे। कोरिया गणराज्य के हा जी-मिन ने नौ नेट अंक के साथ स्वर्ण पदक जीता जबकि मलयेशिया के खैरुलनिजाम मोहम्मद अफेंडी १४ नेट अंक के साथ पोडियम पर आखिरी पायदान पर रहे। सरवनन ने हांगझोऊ एशियन गेम्स २०२३ में कांस्य पदक जीता था। भारत का कैनो स्लैलम कैंपेन बिना किसी पदक के खत्म हुआ। कुल पांच भारतीयों ने पांच पदक स्पर्धा पुरुषों का कयाक एकल, पुरुषों का कयाक क्रास, महिलाओं का कैनो एकल, महिलाओं का कयाक एकल और महिलाओं का कयाक क्रास में हिस्सा लिया। भारत का सबसे अच्छा परिणाम पुरुषों के कयाक एकल में आया, जिसमें प्रद्युम्न सिंह राठौड़ १० फाइनलिस्ट में १२५.२१ के स्कोर के साथ छठे स्थान पर रहे, जिसमें छह सेकेंड की टाइम पेनल्टी शामिल थी।



चहल ने लिया प्रथम श्रेणी क्रिकेट से संन्यास

लंदन (एजेन्सियां)। भारतीय टीम से बाहर चल रहे लेग स्पिनर युजवेंद्र चहल ने पिछले महीने लार्ड्स के प्रतिष्ठित मैदान पर नार्थम्पटनशर की ओर से मिडलसेक्स के खिलाफ अपना आखिरी इंग्लिश काउंटी चैम्पियनशिप मैच खेलने के बाद प्रथम श्रेणी क्रिकेट से संन्यास की घोषणा कर दी। भारत के लिए ७२ एकदिनी और ८० टी-२० अंतरराष्ट्रीय मैच खेल चुके चहल लाल गेंद की क्रिकेटमें अपेक्षित सफलता हासिल नहीं कर पाए। उन्होंन ४९ प्रथम श्रेणी मैच खेले जिनमें छह बार पांच या इससे अधिक विकेट लेनेके कारनामे सहित १४८ विकेट लिए। नार्थम्पटनशरकी तरफ से अपने अंतिम प्रथम श्रेणी सत्रमें चहल ने पांच मैचोंमें २१ विकेट लिए जिसमें डरहम के खिलाफ एक मैचमें नौ विकेट लेना भी शामिल है। चहलने सोशल मीडियापर पोस्ट कर कहा मैंने अपना आखिरी प्रथम श्रेणी मैच लार्ड्समें खेला था। यह कहते हुए मैं भावुक हो रहा हूं क्योंकि टेस्ट क्रिकेट खेलना मेरा सपना था। एक ऐसा सपना जिसे मैंने कई साल तक संजोकर रखा। भले ही यह पूरा न हुआ हो लेकिन मैं अपने अब तक के सफरसे संतुष्ट हूं। मेरे लिए लाल गेंद का क्रिकेट केवल एक अन्य प्रारूप नहीं था। यहीं मैंने धैर्य, जज्बा, दृढ़ता और घंटों तक मैदान पर रहकर हर रन और हर विकेट के लिए संघर्ष करने के आनंद का मतलब सीखा। चहल कभी भी भारतीय टेस्ट टीम में जगह नहीं बना पाये, हालांकि एक बार उन्हें दक्षिण अफ्रीका ए के खिलाफ खेलनेके लिए भारत ए टीममें चुना गया था। उस समय तत्कालीन कोच शास्त्री और कप्तान कोहली को कलाईके स्पिनर की सख्त जरूरत थी।